स्मारिका

अखिल भारतीय कवि सम्मेलन

एवं

यूनिकोड प्रशिक्षण कार्यक्रम

29-30 मार्च, 2012

सत्यमेव जयते

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति,
भारत सरकार, राजभाषा विभाग
जम्मू

iiim

भारतीय समवेत औषध संस्थान,
(सीएसआइआर)
जम्मू-180001 भारत

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू
अखिल भारतीय कवि सम्मेलन
30 मार्च, 2012
NHPC

अखिल भारतीय कवि सम्मेलन

NHPC

2012 3 30

संदेश

मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि नगर राजभाषा कार्यानवयन समिति, जम्मू के तत्वावधान में मार्च के अन्तिम सप्ताह में 29-30 मार्च, 2012 को हिन्दी कम्प्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन हमारी समिति के महत्वपूर्ण सहयोगी सदस्य कार्यालयों के माध्यम से किया गया। मैं इन सदस्य कार्यालयों के पदाधिकारियों को हार्दिक धन्यवाद सहित शुभकामनाएं देता हूँ। चूंकि जम्मू व कश्मीर कला-संस्कृति एवं पर्यटन की दृष्टि से हमेशा ही हमारी भारतीय भाषाएं पल्लवित होती रही हैं। संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अनुसार देवनागरी लिपि में लिखी हिन्दी संघ की राजभाषा है। इसका उद्देश्य यही है कि संघ के समस्त कार्य हिन्दी में सम्पन्न किए जाएं। हमें अपने संवैधानिक दायित्वों का निर्वाहन करते हुए हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं का निरन्तर इस प्रकार विकास करना होगा कि वे हमारी समग्र संस्कृति को अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बना सकें। भाषाओं के सम्पूर्ण विकास के लिए हमें आधुनिक तकनीकों व प्रौद्योगिकी के साथ समन्वय करना होगा। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू विगत दो-तीन वर्षो से गृह पत्रिकाएं प्रकाशित कर रही है। इससे भाषाई अधिगम को बढ़ाने में मार्गदर्शी सिद्ध हुई हैं। भारत सरकार राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन के लिए प्रतिवर्ष वार्षिक कार्यक्रम तैयार करती है। उसी के आधार पर राजभाषा के कार्य कार्यान्वित किए जाते हैं। संसदीय राजभाषा समिति जो राजभाषा की प्रगति पर निगरानी करने वाली सर्वोच्च समिति है और समय-समय पर हमें उचित मार्गदर्शन देती है। गत वर्ष अप्रैल में हमारी समिति के 15 कार्यालयों का निरीक्षण किया गया और उसके मार्गदर्शन से हमारे सदस्य कार्यालयों में समुचित राजभाषा हिन्दी की प्रगति के लिए उत्कृष्ट प्रयासों की ओर उन्मुख है।

मुझे विश्वास है कि यह स्मारिका हमारे नगर समिति में हिन्दी कार्यान्वयन के लिए और अखिल भारतीय स्तर के आयोजनों के लिए प्रतिबद्ध है और आगे भी ये प्रयास जारी रहेंगे। मैं स्मारिका में योगदान करने वाले सभी राष्ट्रीय कवियों, रचनाकारों, लेखकों एवं आयोजकों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

मंगल कामनाओं के साथ !

राम विश्वकर्मा

डॉ. राम विश्वकर्मा
निदेशक, आइ.आइ.आइ.एम., जम्मू एवं
अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू

समीक्षा

30 मार्च, 2012 दिन शुक्रवार को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू के तत्वावधान में पावर ग्रिड कारपोरेशन पारेषण प्रणाली क्षेत्र-।।, जम्मू एवं एनएचपीसी क्षेत्र-। कार्यालय, जम्मू द्वारा आयोजित अखिल भारतीय कवि सम्मेलन में प्रतिभागिता की काव्यात्मक झलक सर्वदा स्मरणीय रहेगी। कविसम्मेलन डॉ. राम विश्वकर्मा निदेशक, भारतीय समवेत औषध संस्थान एवं अध्यक्ष नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। अध्यक्ष महोदय द्वारा दीप प्रज्ज्वलन व माल्यार्पण, शॉल अर्पण व स्मृति चिन्ह भेंट कर कवियों का सम्मान किया गया। इस पवित्र कार्य में डॉ. अमर सिंह संयोजक व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सिंह द्वारा सराहनीय भूमिका प्रस्तुत की गयी। कविमण्डल की ओर से राष्ट्रीय सन्त कवि द्वारा माँ सरस्वती पर माल्यार्पण किया गया। कवि सम्मेलन की बागडोर डॉ. अमर सिंह जी द्वारा डॉ. बहादुर सिंह निर्दोषी राष्ट्रीय सन्त कवि के कर कमलों में प्रदान कर दी गयी। सन्त कवि ने साहित्य की सुमधुर विवेचना के साथ मिर्जापुर से पधारीं डॉ. रचना तिवारी को वाणी-वन्दना के लिए आमन्त्रित किया। डॉ. रचना जी ने अपने सुमधुर कंठ से वाणी वन्दना करते हुए कार्यक्रम को रसमय बना दिया। संचालक जी ने अनेक दार्शनिक रहस्यों को खोलते हुए कटनी म.प्र. से पधारे डॉ. रवि चतुर्वेदी को आमंत्रित किया। उन्होंने अपने सरल व ओजस्वी व्यंग्य-वाणों से श्रोताओं को खूब प्रभावित किया। तदोपरान्त दार्शनिक बिन्दुओं को स्पष्ट करते हुए संचालक जी ने फरूखाबाद उ.प्र. से पधारे गीतकार श्री पवन वाथम को आमंत्रित किया। गीतकार ने अपने मधुर कंठ से श्रृंगार रस के गीतों द्वारा श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। तत्पश्चात् संचालक जी ने मुक्तकों की कड़ियाँ जोड़ते हुए काव्य का वातावरण बदलने हेतु सोनभद्र से पधारे वीर रस के कवि श्री कमलेश राजहंस को आमंत्रित किया। उन्होंने अपनी ओजस्वी वाणी द्वारा शासन व्यवस्था पर करारी चोट की। इसके बाद संचालक जी द्वारा स्वयं हास्य-व्यंग्य की फुलझड़ी छोड़ते हुए कानपुर उ.प्र. से पधारे हास्य-व्यंग्य कवि डॉ. कमलेश द्विवेदी को आमंत्रित किया। उनके व्यंग्यवाणों से श्रोता लोट-पोट होते रहे। इसके पश्चात् समिति की ओर से मंच का सहयोग करने वाली सुश्री रजनी जी की सराहना संचालक ने कवि जयशंकर प्रसाद की पंक्तियों - 'नील परिधान बीच सुकुमार खुल रहा मृदुल अधखुला अंग' द्वारा करते हुए मथुरा से पधारे डॉ. सन्तोष पाण्डेय को आमंत्रित किया। उन्होंने राष्ट्रीय रचनाओं द्वारा श्रोताओं में जोश भर दिया। इसके बाद डॉ. रचना ने अपने प्रेमगीतों द्वारा श्रोताओं को सराबोर कर दिया। दिल्ली से पधारे श्रीकृष्ण निर्मल ने अपनी परिपक्व एवं प्रकृतिवादी रचनाओं द्वारा समाज में व्याप्त विसंगतियों पर इस प्रकार प्रकाश डाला कि श्रोता सोचने के लिए बाध्य हो गए। अन्त में कवि माला के सुमेरू एवं राष्ट्रीय सन्त कवि ने जहाँ एक ओर संचालन की साहित्य कुशलता से मंच को सम्हाला वहीं दूसरी ओर उन्होंने हिन्दी साहित्य की कई विधाओं को प्रस्तुत किया जिससे श्रोताओं व कवियों की माँग पर जब उन्होंने अपनी लोकप्रिय रचना 'चारपाई' को सुनाया तो श्रोता मन्त्रमुग्ध हो गए। इसके पश्चात् डॉ. राम विश्वकर्मा अध्यक्ष द्वारा भावविभोर होकर पुन: कवियों, श्रोताओं व उपस्थित गणमान्यजनों का हार्दिक अभिनन्दन किया गया तथा अपने अध्यक्षीय संबोधन में उन्होंने कहा, ''कि हम ध्यानमग्न होकर कवियों की रचनाओं को सुनते है, मनन करते है और विचारते है, कि हमारे लिए करने योग्य उपदेशात्मक संदेश क्या है?क्योंकि हम वैज्ञानिक हैं।'' उन्होंने आस्था व्यक्त की कि भविष्य में भी, समिति ऐसे आयोजन कराने हेतु प्रतिबद्ध है। उन्होंने पावर ग्रिड कारपोरेश क्षेत्र-।।, जम्मू के कार्यपलक निदेशक श्री एस.सी. सिंह तथा एनएचपीसी क्षेत्र-।, जम्मू के कार्यपालक निदेशक श्री ओ.पी.ठाकुर व उनके समस्त स्टॉफ सदस्यों के सहयोग के लिए उनका आभार व्यक्त किया और अपने संस्थान के सभी सहयोगियों का सम्मेलन में सहयोग के लिए आभार सहित धन्यवाद किया।

अन्त में डॉ. अमर सिंह संयोजक ने माननीय अध्यक्ष महोदय के कविसम्मेलन के अन्त तक अपना अमूल्य समय देने के लिए उनका हृदय से आभार व्यक्त किया साथ ही सभी कवियों का आभार सहित धन्यवाद किया। उन्होंने कवि सम्मेलन में सहयोग देने के लिए सभी सहयोगियों बन्दुओं का आभार प्रकट किया। जिनके अमूल्य सहयोग से यह कार्य सानन्द सम्पन्न हो सका ।

डॉ. अमर सिंह
संयोजक एवं
सदस्य-सचिव, नराकास, जम्मू

भीतर के पृष्ठों पर....

योग-वियोग का आध्यात्मिक रहस्य	3
कोख से कब्र तक कहां आज़ाद है औरत	4
रक्षा करो विधाता	6
लोक साहित्य और लोक मानव	7
बाल मजदूरी: समस्या ही नहीं, कलंक भी	9
तुम्हे क्या मतलब?	10
भारत	12
स्वचिंतन	13
स्वप्नमयी भोर	16
राजभाषा के कार्यान्वयन में यूनिकोड की उपयोगिता	17
पेड़ और नदी की पीड़ा	19
यूनीकोड - हिन्दी पत्राचार का आधार	21
जीवन में असीमित खुशी	22
आपके पत्र	24
अजन्मी बेटी	26
सच के साँचे	28

इस स्मारिका में प्रकाशित व्यक्ति विचार लेखकों एवं रचनाकारों के हैं। इनसे समिति का सहमत होना आवश्यक नहीं हैं।

नगर रजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू
भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू
के तत्त्वावधान में
29-30 मार्च, 2012

प्रायोजित

एन.एच.पी.सी. क्षेत्र कार्यालय, जम्मू

पावर ग्रिड कारपोरेशन, पारेषण प्रणाली, क्षेत्र-।।, जम्मू

अखिल भारतीय कवि सम्मेलन

आयोजन समिति

1. डॉ. राम विश्वकर्मा
   निदेशक, भारतीय समवेत औषध संस्थान एवं
   अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू - अध्यक्ष
2. श्री एस.सी.सिंह
   कार्यपालक निदेशक, पॉवर ग्रिड कॉरपोरेशन क्षेत्र-।।, जम्मू - सदस्य
3. श्री ओ.पी. ठाकुर,
   कार्यपालक निदेशक, एनएचपीसी लिमिटेड, क्षेत्रीय कार्यालय, जम्मू - सदस्य

उपसमिति

श्री संजय सरभई,
मुख्य मानव संसाधन, एनएचपीसी लिमिटेड, क्षेत्र कार्यालय, जम्मू - सदस्य

- श्री स्टैनली मैथ्यू,
  मुख्य मानव संसाधन, पॉवर ग्रिड कॉरपोरेशन, क्षेत्र-।।, जम्मू - सदस्य
- डॉ. अमर सिंह
  वरि. हिन्दी अधिकारी एवं सदस्य-सचिव, नराकास, जम्मू - संयोजक

टंकण सहयोग
श्री राजेश कुमार

सम्पर्क सूत्र
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू
भारतीय समवेत औषध संस्थान
(वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद्)
नहर मार्ग, जम्मू तवी-180 001 भारत
दूरभाष : 0191 - 2569000 फैक्स 0191 - 2569333
ईमेल : amarsingh@iiim.ac.in

योग-वियोग का आध्यात्मिक रहस्य

राष्ट्रीय संत कवि
डॉ. बहादुर सिंह निर्दोशी
फिरोजाबाद (उ.प्र.)

योग, योग्यता का आधार है और वियोग आत्मा की पुकार। योग का सामान्य अर्थ है- जोड़ (मिलकर) या सन्धि। यथा प्रात:कालीन संध्या या सायंकालीन संध्या। संध्या इसी सन्धिकाल का द्योतक है। जहाँ प्रकाश और अंधकार का मिलन है। इस योग में जितना लौकिक मिलन अन्तर्निहित है- उतना ही अलौकिक मिलन। योग में द्वैत का अद्वैत प्रवाह ही नहीं अपितु सम्पूर्ण सृष्टि का प्राण है। आँखें दो है। किन्तु यौगिक दृष्टि एक है। पैर दो हैं किन्तु यौगिक गति एक है आदि-आदि । यही द्वैत का अद्वैतमयी शाश्वत मिठास है। योग में क्षणिक दैहिक स्वाद भी है और शाश्वत आनन्द भी। आनन्द एक ऐसा शब्द है; जिसका विलोम शब्द नहीं है। अत: आनन्द अपने में अखण्ड है। जीवन का अंतिम लक्ष्य इसी आनन्द धारा में डूब जाना ही है। आनंद आत्मा का पर्याय है। जहाँ जीव है वहाँ जीवन है। विकारी जीव को न जाने कितनी योनियों के पर्याय ओढने पड़े हैं। जिस क्षण उत्कृष्ट साधना इस जीवात्मा के जीवत्व को जला देती है- आत्मा परम हो जाती है - यही परमात्मा का खुला रहस्य है। यही आत्मा परमात्मा का मिलन या कैवल्य योग की पराकाष्ठा है। योगी का यही मूलधन है।

योग चाहे कर्म योग है, चाहे भक्ति योग है अथवा ज्ञान योग। बिना एकीकृत हुए न वह योग है और न ही वह साधक की योग्यता। सांसारिक सृजन धरातल पर रसाचार्यो ने श्रंगार के दो भाग किये हैं - (क) संयोग श्रंगार और (ख) वियोग श्रंगार किन्तु ध्यान रहे कि वियोग का अर्थ मात्र विलग होना ही नहीं बल्कि विशेष योग भी है। आप अपने चिन्तन में थोड़ा डूबें और मन करें कि प्रिय के अभाव (विरह) में जो रिक्तता है और इस रिक्तता में प्रिय के बिम्ब के प्रति जो बार-बार आकर्षण का जो मधुर ज्वार उठता है - वह सचमुच संयोग से भी बहुत ऊपर चला जाता है - यह अलौकिक आनंद वियोग का ही अलौकिक माधुर्य है। हिन्दी की सुप्रसिद्ध कवयित्री महादेवी वर्मा के उनके पति ने दैहिक कुरूपता के कारण त्याग दिया, किन्तु आगे चलकर उस परित्याग ने अपने दैहिक प्रियतम पर उस अनंत प्रियतम की ऐसी छाया डाली कि सारे अपेक्षित संयोग वियोग के आगे धूल चाटते रह गये और उस 'नीर भरी दुख की बदली' का सर्वव्यापी नीर हिन्दी साहित्य के छायावादी पृष्ठों पर ऐसा बरसा कि अमृत स्वयं वियोगी होकर योगी हो गया।

सारांश यह है कि योग की आध्यात्मिक कला तक पहुँचने के लिये हमें अपनी नैतिक योग्यताओं से ही निकलना पड़ेगा। कर्म के कानन में जितना हम 'विकर्म' मिला लेंगे, कर्म सरल होते-होते एक दिन अवश्य अकर्म का स्थान पा लेगा - फिर संसार का कर्ता आपको बाहर नहीं बल्कि भीतर ही अनुभूत होने लगेगा। चित्त पर सुधी चित्र गिरते ही चित्त का द्वन्द समास अर्थात् विरोधी भाव नष्ट होने लगेगा ।

कोख से कब्र तक कहां आज़ाद है औरत

रचना तिवारी (गीतकार)
सोनभद्र उ.प्र.

बात खुद से शुरु करती हूँ जब मैंने गीत लिखना और मंचों पर पढ़ना शुरु किया तो जो बातें गर्भ में नहीं थी वो भी जन्म लेने लगीं, लेकिन आज अपने आत्मबल से वहां खड़ी हूँ जहां पर रचनाधर्मिता से अधिक किसी बात का कोई मतलब नहीं है मेरे लिये ।

जीभ सिर्फ हुकूमतो की होती है, इंसान तो कबका चुप है। ये धरती मजबूरियों का लम्बा इतिहास है। दुर्योधन की भरी सभा में द्रोपदी का एक ही प्रश्न था कि, जब युधिष्ठिर स्वयं को हार चुके हैं तो उन्हें मुझे, दांव पर लगाने का अधिकार किसने दिया। ये सवाल हज़ारों वर्षो से हवा में तैर रहा है। खामोशी का दोष बहुत बड़ा है, विस्तर से लेकर राजसिंहासन तक। वैसे भी औरत का पाप फूल के समान है जो जुबान के पानी में तैरता रहता है और मर्द का पाप पत्थर के समान है जो पानी में डूब जाता है।

आज भी औरत पहले शरीर है फिर व्यक्ति है। औरत अपनी देंह से परे होने की जितनी कोशिश करती है उसे उतना ही एहसास कराया जाता है कि वह पहले देंह है। जब भी कभी औरत एक नाम बनती है तो वो उसकी बड़ी कीमत चुकाती है। जब वह व्यक्ति से व्यक्तित्व बनती है तो उसे छोटे बड़े आरोपों और लड़ाईयों से घिरना पड़ता है। आज भी समाज के एक वर्ग के लिये सक्षम औरत एक चुनौती है। उसकी सक्षमता से अलग हटकर उसका शरीर देखा जाता है और देंह से सम्बन्धित साधिकार टिप्पणी की जाती है।

स्त्री स्वयं अपने बारे में अन्जान है, उसने कुए के मेढ़क की तरह अपने बारे में कभी सोचा ही नहीं। अपने साज श्रृंगार आवश्यकताओं की पूर्ति को ही सच्चा सुख माना, लेकिन वहीं पर अगर किसी स्त्री ने अपने विषय में सोचा तो पहले अपना जीवन अशांत बनाया। किसी भी पुरुष की खाल खींचने पर एक सामन्ती पति अवश्य बैठा मिलेगा कभी चोराहे पे, कभी कोठे पे, कभी बिस्तर पे, क्या औरत का बदन के सिवा कोई वतन नहीं होता। आज कहीं न कहीं औरत की देंह में जख्म और दर्द से कराहती हुई आत्मा दम तोड़ती है, जहां औरत मरकर अपने को मुक्त समझने लगती है। यही है उसके देंह की सबलता। स्त्री की पीड़ा से कोई चिंता नहीं पनपती, चिंता स्त्री के सतीत्व पर आंच न आने से जुड़ी होती है।

आज दुनियां भर में महिलाओं के शोषण का श्रोत एक ही है, वह एक ऐसा सबल साम्राज्य है, जिसके रास्ते में शायद कोई रूकावट नहीं है। इस नये दौर में हमने वो बहुत कुछ खो दिया है जिसे मुश्किल से पाया था। काम के अवसर तो कम हुए लेकिन शर्तें कठिन हो गई।

एक पक्ष यह भी सच है कि आज स्त्रियों की स्वतंत्रता में, उनके कपड़ों में, अश्लील तस्वीरों में, अपरिपक्व मानसिकता में बढ़ोत्तरी हुई है। कैरियर के माहौल में अधिकतर महिलायें दिशाहीन होकर चूहा दौड़ में शामिल हो रही है।

प्रश्न यह पैदा होता है कि कम कपड़े बलात्कारी को उकसाते हैं तो राजस्थान की सिर ढककर चलने वाली भंवरी देवी की इज्जत से क्यूं खेला गया। अनारा गुप्ता (मिस जम्मू) को वह नहीं बनने दिया जाता जिसमें वह सक्षम है। वह बरी

होते हुए भी उलझा दी जाती है। अश्लील मामले में फंसा दिया जाता है। आज भी बंग्लादेश और नेपाल की औरतें वेश्यावृत्ति के धन्धे से जुड़े माफिाओं के खिलाफ लड़ रही हैं। जो गरीब लड़कियों का सौदा करके निर्यात करते हैं। पाकिस्तान की महिलायें बर्बर कानून के खिलाफ लड़ रही है। दुनिया के सबसे अधिक विकसित देश स्विटजरलैंड की महिलायें घरेलू हिंसा के विरुद्ध सख्त कानून के लिये लड़ रही हैं। हद तो तब हो जाती है जब शिकायतें सामनें आती हैं। चरम पर, औरत को कोख में ही मार डालने की साजिश समाज द्वारा ही रची गई।

मधुमिता हत्याकांड में चर्चा सिर्फ उसके चरित्र की हुई उसी के घर में कत्ल होने के बाद भी उसे ही कटघरे में खड़ा किया गया। पाकिस्तान की मुख्तारन माई का वही धर्म परंपरा और इज़्जत के नाम पर तुगलकी फरमान आज भी रेखांकित करता है कि महिलाओं के लिये इक्कीसवीं शताब्दी भी उतनी ही बेरहम है जितनी अन्य शताब्दियां। आज महिलाओं के मामले को मीडिया भी घी का पीपा लेकर आग भड़काने में कोई कसर नहीं छोड़ता। बाजार वाद और उपभोक्ता वाद अपनी तरह से हावी है।

और तो और साहित्य के क्षेत्र में भी महिलाओं का शोषण हो रहा है। यहां तो अन्य क्षेत्रों से कई गुना ज्यादा गलत किया जाता है। अंततः औरत को कब, कहां, किस तरह सुरक्षित एवं सबल बनना है, वह स्वयं पर एवं परिस्थितियों पर निर्भर करता है।

सौन्दर्य प्रतियोगिताओं से स्त्री आज़ाद नहीं हो सकती, आजादी विचारों की, व्यक्तित्व निखारने की स्वयं को स्थापित करने की होनी चाहिये। पोस्टर की तरह बिस्तर बदलना आजादी नहीं है। नग्नता कभी भी आज़ादी का प्रतीक नहीं बन सकती।

डॉ. कमलेश द्विवेदी
हास्य-व्यंग्य रचनाकार
कानपुर (उ.प्र.)

रक्षा करो विधाता

हिन्दुस्तानी होकर हिंदी नहीं बोलना आता,
ऐसे लोगों से भारत की रक्षा करो विधाता,
जीवित होकर भी खुद को ये
''ममी'' ''डैड'' कहलायें
घृणा करें निर्धन बच्चों से
कुत्तों को सहलाएं
ये स्वदेश को कहें ''इण्डिया'' भूले भारत माता
ऐसे लोगों से भारत की रक्षा करो विधाता
हिंदी में ''जीजा-साले'' में
अंतर बहुत बड़ा है
कैसा भी हो जीजा लेकिन
साले से तगड़ा है
''कहें ब्रदर-इन-ला'' दोनों का कैसा रिश्ता-नाता
ऐसे लोगों से भारत की रक्षा करो विधाता
भाव राष्ट्र भाषा के प्रति जब
नेता जी में जागे
बोले-हिन्दी की ''प्रोग्रेस'' से
देश बढेगा आगे
लेकिन हिंदी में हस्ताक्षर करना इन्हें न भाता
ऐसे लोगों से भारत की रक्षा करो विधाता
हिंदी ने जीना सिखलाया
दी है रोजी-रोटी
लेकिन शर्ट-पैंट-टाई में
भूले कुरता-धोती
पिता व्याख्याता हिंदी के पुत्र कॉन्वेंट जाता
ऐसे लोगों से भारत की रक्षा करो विधाता

लोक साहित्य और लोक मानव

पवन बाथम
कवि एवं गीतकार
फरूखाबाद (उ.प्र.)

कोई भी भाषा अपने युग की आइना होती है। वह समाज की घटनाओं, स्थितियों एवं भविष्य की ओर देखती हुई चलती हैं। भाषा व्यक्ति और उसके संसार की हलचलों को आत्मसात करते हुए पीड़ा का सार्थक प्रतिबिम्ब होती है हिन्दी भाषा उन्नीस भौगोलिक बोलियों और एक सौ चौसठ उपबोलियों से अपने को सुसज्जित करती हैं।

महापण्डित राहुल सांस्कृत्यायन के शब्दों में, ''सभ्यता के प्रभाव से दूर रहने वाली, अपनी सहजावस्था में वर्तमान, साधारण जनता की आशा-निराशा, हर्ष-विषाद, जीवन-मरण, लाभ-हानि, सुख-दुख आदि की अभिव्यंजना जिस साहित्य में होती है, उसी को लोक साहित्य कहते हैं। लोक साहित्य जनता का वह साहित्य है, जो जनता द्वारा जनता के लिए रचा गया है।''

लोक मानव अपनी लोक भाषा में जो अभिव्यक्ति देता है वह अद्वितीय है। वह जो कुछ सीखता है उसे समूचे लोक के साथ साझा करता है। उसे इस बात का रंच मात्र भी दम्भ नहीं होता कि वह शब्द का निर्माता है।

लोक कहावतों, लोकोक्तियों और लोक मुहावरों से, को देखें तो स्पष्ट हो जाता है कि लोक मानव के पास गजब की वाक् पटुता है।

नई पीढ़ी को बड़े बुजुर्गो की बात खराब लगती है तो कहावत है कि बड़े का कहा और आँवले का खाया पीछे से मीठा लगता है। बड़ों की बात सुनकर तिल मिलाए युवा मन में उठे भूचाल को एकदम शान्त कर देता है जैसे आँवला खाते समय कसैला बाद में मीठा लगता है।

लोक समाज में ऐसे तीन लोगों की जग हँसाई निश्चित है जो झूठी शान हेतु उधार लेते हैं, दूसरे जो छप्पर में सुरक्षा हेतु ताला डालते हैं और तीसरे जो अपनी बहिन को साले के संग भेज देते है। अत: इससे बचना चाहिए -

उधार काढ़ि व्यवहार चलावें,
छप्पर डारै तारो।
सारे के संग बहिन पठावै,
तीनों को मुँह करो ।।

तीन ऐसे लोग भी बताए गए जो भकुआ (मूर्ख) है घर में घोड़ी बँधी और पैदल जाएँ। युद्ध के मैदान में तीर बीन कर युद्ध करे और सम्पत्ति दामाद के घर रख आए -

घर घोड़ी पैदल चले,
तीर चलावे बीनि।
थाती धरे दामाद घर,
जग में भकुआ तीनि।।

समय एक सा नहीं रहता - समय परे की बात ,
बाज पै झपटै बगुला।

परिवर्तनशील जगत में सुख-दुख आते जाते रहते हैं -

सुख सम्पत्ति और अॅउदसा सब काहू के होय ।

ज्ञानी काटे ज्ञान सो, मूख काटे रोए ।।

संगत का प्रभाव भी बहुत पड़ता है -

संगत ही गुन ऊपजत, संगत ही गुन जाए।

लोक साहित्य में कहा गया कि किसान का आलसी होना बैरागी का लालची होना चोर को खाँसी आना और विधवा स्त्री स्वभाव से हँसमुख हो तो लोग उगँली उठाने लगते हैं -

आलस नींद किसाने खोबई, चोरै खोबै खाँसी ।
टका ब्याज बैरागी खोबै, राँड़इ खोबै हाँसी ।।

यदि बैलगाड़ी में बैल चौकने है। और पत्नी बहुत सुन्दर है तो कहा गया है कि बैल भरे बाज़ार में चौंक जाएं तो आफत और मनचले पत्नी को छेड़े और पति विरोध करें तो भी आफत -

बैल चौकने जोत में, घर चमकीली नारि।
जे बैरी है। जान के भली करे करतार ।।

इसी तरह कुछ और कहावते बहुत प्रचलित है जैसे -

1. लटे की मेहरिया सब गाँव की भौजाई।
2. उजड़े गाँव में अण्डउआ रूख ।
3. कुजघा को फोड़ा और ससुर वैद ।
4. खेत विगारे खत्तुआ, सभा विगारे दूत ।

घाघ की लोकोत्तियों में शिक्षा व भविष्य वाणी का प्रादुर्भाव हुआ है -

पानी बरसे आधा पूस । आधा गेहूँ आधा भूस ।।

कुवांर करेला, कातिक दही । चइत मिठाई कन्नई कही ।।

लोक साहित्य हमारे आस-पास बिखरा पड़ा है बस इसे एकत्र कर पुस्तकीय रूप देने से इसे सुरक्षित रखा जा सकता है क्योंकि शिष्ट साहित्य के निर्माण में लोक साहित्य की बहुत बड़ी भूमिका रहती है।

बाल मजदूरी: समस्या ही नहीं, कलंक भी

डॉ. संतोष पाण्डेय
कवि वीर रस
गाजियाबाद (उ.प्र)

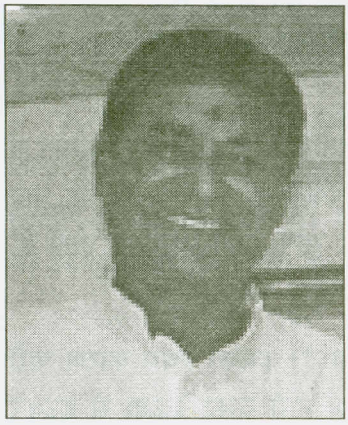

''जिस देश में गंगा बहती है उस देश का पौधा सूखा क्यों?
जो देश था सोने की चिड़िया उस देश का बच्चा भूखा क्यों?''

यह प्रश्न मैं देश की 1 अरब 20 करोड़ जनता के साथ ही पूरी ज्वलन्तता के साथ ही स्वयं से भी पूछ रहा हूँ। सत्तासीन लोगों, पूँजीवाद सामान्तों, कल-कारखानों के मालिकों व जिम्मेदार अफसरों की आँखों को देश में बाल मजदूरी दिखाई नहीं पड़े तो इसमें बहुत आश्चर्य नहीं। उनके सुपुत्रों के नाम देश-विदेश में बैंक के खाते भरे रहने चाहिए, सत्ता की कुर्सियों पर उनकी वसीयत बनी रहनी चाहिए। गरीब का बेटा भले कंडक्टर बन जाये परन्तु कलक्टर पद पर उनके पुत्र रत्नों के नाम सुरक्षित रहने चाहिए ।

'सर्वेभवन्तु सुखिनः', 'सर्वभूतहितेरतः' व 'परहित सरिस धर्म नहिं भाई' के गायक राष्ट्र के ललाट पर बालमजदूरी का कलंक क्यों?कौन हैं इसके जिम्मेदार?क्या केवल सरकार ?केवल पूंजीपति ?केवल अफसर? केवल न्यायाधीश? हम आप सब क्यों नहीं? याद आती है राष्ट्र कवि दिनकर की पंक्तियाँ -

स्वानों को मिलता दूधभात भूखे बच्चे अकुलाते हैं।
माँ की छाती से चिपक ठिठुर जाड़े की रात बिताते हैं।

कभी मेरी कलम ने अश्रुपात किया था -

चिमनियों के साए में वे सिसकियाँ भरते मिले,
उम्र थी जिनकी घरों में खिलखिलाने के लिए ।

जो लोग तर्क देते हैं कि मैं माँ-बाप बालकों को मजदूी पर भेजते क्यों है, उन्हें मैं विनम्रतापूर्वक याद दिलाना चाहूँगा -

झूठ न बोले, चोरी न करे, तो क्या करें,
चूल्हे पे क्या उसूल पकायेंगे शाम को ।

इस समस्या और कलंक ने कई समाधान खोजकर त्वरित रूप से उन्हें लागू करने का दायित्व पूरे देश के जन-जन का है। कुछ समाधान बिन्दु ये भी हो सकते हैं -

1. कड़े कानून, कड़ी सजा ।
2. रोजगारपरक 14 वर्ष तक अनिवार्य शिक्षा ।
3. भूख, स्वास्थ्य के कड़े कानून बनें व लागू भी हों ।
4. जनसंख्या नियंत्रण के कड़े कानून बनें व लागू भी हों।
5. पूंजीपति महादान को आगे आएँ ।
6. आय का दसवां हिस्सा हम सब दरिद्र नारायण की सेवा में अर्पित करें ।
7. बाल-मजदूरों में अपने करुणावतार इष्ट-प्रभु के जीवन्त दर्शन करें, उनमें अपने सगे बच्चे की छवि देखें आदि-आदि ।

तुम्हे क्या मतलब?

श्री कृष्ण निर्मल,
प्रकृतिवादी कवि
उपशिक्षा अधिकारी, नई दिल्ली

नैतिक आदर्शों के कारण ही हमारी संस्कृति विश्व में वन्दनीय व पूजनीय है। वर्तमान में इस पर पाश्चात्य संस्कृति का अनावश्यक प्रभाव सर्वथा निन्दनीय व सोचनीय है। यह बात तो मान्य है कि प्राकृतिक वातावरण से मनुष्य का भोजन व रहन-सहन प्रभावित होता है, पर इसका अर्थ यह नहीं कि व्यर्थ में ही अर्थ का अनर्थ कर दिया जाए।

आज समाज में बलात्कार की समस्या एक ज्वलन्त समस्या है। इसका प्रथम कारण नारी की वेश-भूषा है। आज के समय में स्वेच्छाचारिता के कारण नारी वास्तविकता से हटकर अंग प्रदर्शन करती हुई चल रही है, जोकि बलात्कार के लिए खुला आमंत्रण है। सात्विक सौन्दर्य सार्वकालिक पूज्य रहा है और कालान्तर में भी रहेगा। इसके स्थान पर जहाँ कही भी कृत्रिमता व भड़काऊपन होगा वहीं इस इस जघन्य अपराध की स्थिति बनेगी। इसके विपरीत कुछ सुशील व सभ्य नारियाँ भी दुष्टों की कुचालों का ग्रास बन जाती है। कृत्रिमता से ग्रसित किसी भी नारी अथवा किशोरी को कोई सभ्य पुरूष यदि समझाने का उपदेश भी करता है तो उस बेचारे को उत्तर मिलता है, तुम्हें क्या मतलब ?

आज का पुरूष समाज धीरे-धीरे असंयमित, स्वेच्छाचारी, उन्मादी तथा अधः पतन की ओर अग्रसर होता चला जा रहा है। वह यह मानकर चल रहा है कि वह जो कुछ भी कर रहा है वह पूर्णतः सार्थक है। वह किसी के उपदेश को मानने के लिए तैयार ही नहीं है और यदि कोई प्रयास भी करता है तो ऐसे व्यक्ति पर उनका क्रोध ही बढ़ता है। किसी संस्कृत के विद्वान ने (ऐसे व्यक्ति के विषय में) बड़े सुन्दर शब्दों में वर्णन किया है। यथा-

उपदेशों कि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये

पयपानं भुजङ्ग.ानां केवलं विषवर्धनम् ।।

कल्पना कीजिए वर्तमान में समाज तथा राष्ट्र का कैसा दुर्भाग्य है कि कोई भी सुधारक प्रयास करता है तो उसे निराशाही मिलती है। माता-पिता अपने कुमार्गी बच्चों के अन्धे-भक्त हैं। यदि उन्हें उनके बच्चों के क्रियाकलापों से अवगत कराया जाए तो उत्तर मिलता है तुम्हें क्या मतलब ?

एक समय था, जब गॉव का एक बुजुर्ग चाहे वह किसी भी जाति वर्ग व समुदाय का होता था पर उसकी बात समाज में प्रायः सर्वमान्य होती थी। गलत बात पर यदि वह किसी बच्चे की प्रताड़नाभी कर देता था तथा बालक उस पुरूष का परिचय देता हुआ अपने माता-पिता को शिकायत करता था तो उसे माता-पिता के द्वारा भी प्रताड़ना मिलती थी। परिणाम स्वरूप बालक भविष्य में कोई प्रताड़नीय अपराध नहीं करता था। आज कहाँ गए वे दिन और कहाँ गया वह समाज। इस बात को सभी जानते हैं तथापि प्रतिक्रिया स्वरूप सब ओर से उत्तर यही मिलता है कि- तुम्हें क्या मतलब ?

इस प्रकार के दुर्गुणों का समाज में गुणात्मक विस्तार होता चला आ रहा है। हर स्तर पर अनुशासनहीनता दिखाई दे रही है। अतः इसका समाधान भी हर स्तर पर ही होना चाहिए। इसके लिए हम सभी का समवेत प्रयास होना चाहिए।

सुधार के प्रयासों में अपनत्व होना चाहिए तथा कानून के नियमों की भी समीक्षा होनी चाहिए। आज भयंकर अपराधी साक्ष्यों के अभाव में न्यायालय से ससम्मान दोषमुक्त हो जाते हैं। इसके परिणाम स्वरूप छोटे अपराधी अपराध करने से यह मानकर नहीं डरते कि उस अमुक अपराधी का क्या बिगड़ गया। राष्ट्र की हालत दिन-प्रतिदिन दयनीय व सोचनीय होती जा रही है। स्वस्थ राष्ट्रीय अनुशासन के लिए सामाजिक व राष्ट्रीय विचारकों को सम्मिलित प्रयास करना होगा।

मेरे जीवन में ऐसे अवसर प्राय: आते ही रहते हैं। मैं शरारती व अपराधी तत्वों को रोकने का प्रयास अवश्य ही करता हूँ। यह कार्य सरल नहीं है। इस कार्य में मुझे कभी सफलता भी मिलती है और कभी विफलता। सफलता के लिए निरन्तर आशान्वित रहता हूँ। कुछ निराश लोग मुझसे कहते हैं कि आप हर जगह क्यों बुराई लेते हो; जबकि अन्य कोई भी आपका साथ नहीं देता है। ऐसे लोगों को मेरा उत्तर बड़े विनम्र शब्दों में इस प्रकार होता है कि- तुम्हें क्या मललब ?

----O----

भविष्य उज्ज्वल है। कुछ लोग सोचते हैं कि अच्छी शिक्षा और अच्छी नौकरी हिंदी पढ़कर संभव नहीं हो सकती है। हिंदी में कार्य करने वालों या हिंदी बोलने वालों को हीन भावना से देखा जाता है। न जाने हिंदी को लेकर हम किन-किन कुंठाओं से ग्रसत हैं। आज ऐसा कुछ भी नहीं है। विद्यार्थी हिंदी माध्यम से उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। नौकरियों के लिए लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार में हिंदी को अनिवार्य कर दिया है।

कुछ ऐसे अटपटे प्रश्नों से जद्दोजहद करते हुए यह आत्मचिंतन और विचारों का मंथन होता है कि आज भी हिंदी को राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने में हम बहां तक नहीं पहुँच पाए हैं जहाँ हमें होना चाहिए था। देश की राजभाषा/राष्ट्रभाषा यदि हिंदी है तो क्या राष्ट्र का गौरव आपको हिंदी की ओर आकर्षित नहीं करता?स्वतंत्रता आंदोलन की भूमिका और बलिदान क्या व्यर्थ थे? अंग्रेजी यदि इतनी ही लाभप्रद है तो अंग्रेजी क्या बुरे थे? क्या विश्व के अन्य देशों -रूस, फ्राँस, जर्मनी, जापान, चीन आदि ने क्या अंग्रेजी माध्यम से प्रगति की है?फिर भी यदि अंग्रेजी आजीविका का साधन बनकर पेट की भूख मिटा सकती है, लेकिन यह मन की संतुष्टि नहीं कर सकती और भावनाओं की भूख मिटा सकती है।

इन सबके बावजूद भी पिछले 20 वर्षों से राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का विकास हुआ आर्थिक उदारीकरण और वैश्वीकरण की नीतियों से सम्पूर्ण विश्व का परिदृश्य बदल चुका है। आज पूरा विश्व एक बाजार के रूप में सिमट चुका है। भूमंडलीकरण का सर्वाधिक परिणाम बाजार एवं मंडी पर दिखाई देता है। विदेशी उद्योगपति हमारे यहां अपने उत्पादों को बेचने के लिए हमारी भाषा को माध्यम बनाकर निरंतर अभिवृद्धि कर रहे हैं। आज हिंदी भाषा बाजार की ताकत बन गई है। इस दृष्टि से विश्व स्तर पर हिंदी को बढ़ावा मिल रहा है। आज के परिवेश में जब भूमंडलीकरण वैश्विक परिप्रेक्ष्य और संचार-क्रांति की लहर चारों ओर तेजी से विकसोन्मुखी होकर जनता-जनार्दन और राष्ट्र की सेवा में अपने को समर्पित कर रहा है तो हम किसी से पीछे क्यों रहें।

हमारा यह दृढ़ निश्चय होना चाहिए कि हम राजभाषा हिन्दी में कामकाज करने की चुनौतियों को शतप्रति-शत रूप से स्वीकार करें। पावरग्रिड ने बड़ी से बड़ी चुनौतियों को स्वीकार कर सफलताएं प्राप्त की हैं, अत: हमें राजभाषा हिंदी की चुनौती को भी स्वीकार करके भारतीय संविधान के प्रति निष्ठा, प्रेम और स्वाभिमान की अभिव्यक्ति में अग्रणी भूमिका निभानी है। जब समस्त कार्मिक अपना प्रत्येक काम हिन्दी में करेंगे तथा जनता के साथ कार्य व्यवहार में हिंदी अपनाएंगे तो फिर इसे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता। आज आवश्यकता है केवल अपनी मानसिकता बदलने की एवं ऐसा वातावरण तैयार करने की जहाँ हमारी आस्था, इच्छा-शक्ति और संकल्प सदैव जनहित और राष्ट्र हित के लिए हों।

आइए, हिन्दी का एक सृजनात्मक वातावरण तैयार करने के लिए मिलकर चिंतन करें:-

1. आज से हम सभी अपने-अपने हस्ताक्षर अनिवार्य रूप से केवल हिंदी में ही करें।
2. स्वयं अधिक से अधिक कार्यालयीन कार्य हिंदी में ही करें एवं अपने सहयोगियों को भी हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित करें ।
3. मूलरूप से हिंदी में पत्राचार करें ।
4. आपसी बातचीत केवल हिंदी में ही करें ।
5. दृढ़ संकल्प एवं कृत संकल्प से हिंदी को अपनायें।
6. सरल और बोधगम्य हिंदी का प्रयोग करें ।
7. अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्दों को ग्रहण करने में न झिझकें।

8. उचित पर्याय न मिलने पर शब्दों को ज्यों का त्यों देवनागरी में लिखें।

9. हिंदी को तकनीकी/विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों की भाषा बनाने में सहयोग करें ।

10. हिंदी शिक्षण व्यवस्था में सकारात्मक परिवर्तन लाकर इसे और मजबूत करें ।

11. हिंदी और संस्कृति- अन्य राज्यों, देशों से सांस्कृतिक संबंधों को प्रगाढ़ बनाना होगा क्योंकि भाषा के माध्यम से किसी राज्य या देश की संस्कृति को जाना जा सकता है।

12. हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए हमें अपनी भाषा के प्रति स्वाभिमान का भाव जागृत करना होगा।

13. हिंदी को आत्म सम्मान के भाव से जोड़ना होगा। हीनता और पिछड़ेपन के भय को दूर करना होगा।

14. हिंदी भाषा और हिंदी साहित्य के प्रचार-प्रसार हेतु नए मार्ग प्रशस्त करने होंगे।

15. हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु नई पीढ़ी को आगे लाना होगा क्योंकि वे ही भावी कर्णधार हैं जो भविष्य के सूत्रधार बनेंगे।

16. प्रत्येक कार्यालय में हिन्दी पुस्तकालय की अनिवार्य रूप से स्थापना करनी होगी।

17. हिंदी के विकास के लिए सूचना प्रौद्योगिकी से जुड़ना होगा। इन्टरनेट में अधिक से अधिक हिंदी भाषा का प्रयोग करना होगा ।

18. हिंदी वेबसाइट के माध्यम से हिंदी को बढ़ाने के लिए विश्व स्तरीय प्रयास करने होंगे।

19. जनमानस में हिंदी के प्रति जागरूकता लाने के लिए हिंदी आखबारों, हिंदी पत्रिकाओं का अधिक से अधिक प्रयोग करें ।

20. सभी प्रकार के फार्म हिंदी में भरें ।

21. कार्यालय की सभी प्रकार की रिपोर्टें हिंदी में भेजें।

22. राजभाषा अधिनियिम 1963 की धारा 3(3) का आवश्यक रूप से पालन करें ।

23. राष्ट्रीय एकता और अखण्डता को मजबूत बनाने में राजभाषा के योगदान को स्वीकार करें ।

आओ आज शफत लें, हम दिल से अपनायेंगे हिंदी भाषा।
विदेशी मोह-निद्रा त्याग कर, दुल्हन की तरह सजायेंगे अपनी भाषा।।
हम सब का हो यही प्रयास, हिंदी हो जन-मानस की भाषा।
कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक, हिंदी ही हो हम सबकी भाषा।।

आइए, संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा ''हिन्दी'' को बनाने के लिए हम सभी समूह रूप से संयुक्त आवाज बुलंद करें और इसकी गूंज सम्पूर्ण विश्व में फैला दें ।

----O----

स्वप्नमयी भोर

बिमला गुप्ता
से.नि.वरि. लेखा परीक्षक,
महालेखाकार, जम्मू

इस भोर किरन की बेला में, प्रतिबिम्ब उभर एक आया है।
ये मेरी कल्पना की देवि, मैंने एक चित्र बनाया है।।

अंजुरि में लेकर पुष्पों को, तुम धीरे धीरे आती हो।
बिखरी हैं लटें कपोलों पर, तुम धीरे से मुस्काती हो।।
यूं अधर कांपते है तेरे, जैसे कोई गीत चुराया है।
ये मेरी कल्पना की देवि, मैंने एक चित्र बनाया है।।

वीरान पड़ा था यह उपवन, लो गूंज उठी अब शहनाई
सुनसान पड़ी थी पगडंडी, ली आशा ने फिर अंगड़ाई।।
तेरी धानी चूनर के नीचे, संसार सिमट कर आया है।
ये मेरी कल्पना की देवि, मैंने एक चित्र बनाया है।।

यह गीत तेरे मध्यम सुर के, कानों में अमृत घोल रहे।
कहीं आज ठगा न जाऊँ मैं, यह मेरा संयम तोल रहे।
तुम्हें प्रिये कहूँ मैं या प्रियतम, अब तलक नहीं बतलाया है।
ये मेरी कल्पना की देवि, मैंने एक चित्र बनाया है।।

कुछ पल ठहरों विश्राम करो, जी भर कर तुम्हें निहारूँ मैं।
न जाने फिर कब आओगी, अंतस्थ में तुम्हें उतारूँ मैं
जो ढूंढ रहा था सदियों से, बस एक झलक में पाया है।
ये मेरी कल्पना की देवि, मैंने एक चित्र बनाया है।

इस धुंधली बेला में, प्रतिबिम्ब उभर एक अया है।
यह मेरी कल्पना की देवि, मैंने एक चित्र बनाया है।

----O----

राजभाषा के कार्यान्वयन में यूनिकोड की उपयोगिता

अमित कुमार
प्रबंधक, सू.प्रौ.मंडल कार्यालय,
पंजाब नेशनल बैंक, जम्मू

यूनिकोड

यूनिकोड विश्व की सभी भाषाओं को कम्प्यूटर पर प्रस्तुत करने की युक्ति है। यह बहुत रोचक है और एक ही युक्ति से सभी भाषाओं को प्रस्तुत है। यह भाषाओं पर आधारित है। यह सभी कम्प्यूटरों पर चल सकता है। यह 16 अंकों को उपयोग करके 65,536 असर बनाता है। इससे पूरे विश्व की भाषायें प्रस्तुत की जा सकती है। यूनिकोड जैसी लिपि सभी के कार्य को आसान बनाती है। यूनिकोड विंडो 2000 और उसके बाद के वर्जन विंडो एक्सपी, 2003, विस्टा और विंडो 2007 मे विकसित हो गया और विभिन्न देशों में इस्तेमाल किया जा रहा है। इस तरह के वैश्विक परिदृश्य में, जरूरत प्रतिनिधित्व अलग-अलग भाषाओं के अक्षर में कई गुना वृद्धि हुई। प्रारूप करने के लिए इसके अलावा भ्रम से बचने और अनुप्रयोगों के विकास के लिए मानकीकृत एन्कोडिंग आवश्यक था।

कार्यक्रम और भाषा की परवाह किए बिना - यूनिकोड एन्कोडिंग मंच हर चरित्र के लिए एक अद्वितीय संख्या प्रदान करता है। शीर्ष सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर कंपनियों जैसे माइक्रोसॉफ्ट, एप्पल, ह्य्व्लेट-पॅकर्ड (एचपी), ऑरेकल और अधिक यूनिकोड मानक को अपनाया है। आधुनिक ब्राउज़रों जैसे इंटरनेट एक्सप्लोरर (आईई), मोज़िला, फ़ायरफॉक्स, गूगल क्रोम, ओपेरा, सफारीअ आदि और विंडोस, मैक ओएस और लिनक्स जैसे ऑपरेटिंग सिस्टम - यूनिकोड एन्कोडिंग को समर्थन करते हैं।

यूनिकोड. ओआरजी विभिन्न संसाधनों को जानने के लिए विभिन्न भाषाओं के यूनिकोड का उपयोग प्रदान कर और साथ ही अपने चरित्र प्रस्तुत करने का तरीका प्रदान करता है। हाल ही में भारतीय रुपया के लिए यूनिकोड प्रतीक इसके अतिरिक्त है जो अभी तक मूल उपकरण निर्माता हार्डवेयर के साथ जारी किया जाएगा। हालांकि, तत्काल इस्तेमाल के लिए छवियों और यूनिकोड जारी किया गया है।

यूनिकोड कंसोर्टियम यूनिकोड. ओआरजी चलाया है और यह एक गैर लाभ संगठन है। इस संघ का मुख्य उद्देश्य विकास, विस्तार और यूनिकोड के प्रयोग को बढ़ावा देने में एक मानक के रूप में है।

यूनिकोड को 'पीसी' में प्रयोग करने के स्टेप निम्नलिखित है

विंडो एक्सपी, विस्टा और विंडो 2007 में भारतीय भाषाएं मौजूद है यदि आप इन सुविधाओं को सक्रिय करते है तो किसी भी भाषा का उपयोग किया जा सकता है। सक्रिय करने के स्टैप्स इस प्रकार है:

1.भाषाओ को सक्रिय करना

Start बटन पर क्लिक करें Control Panel पर जाये Regional and Language Options में जाएं Language

tab पर क्लिक करें Install files for complex and right to left languages (including thai) के बाये बाक्स पर क्लिक करे Apply पर क्लिक करें (अगर पीसी सीडी की मांग करें तो कोई भी विंडो कि सीडी डाले) इसके बाद Restart करने पर भारतीय भाषाएं पीसी पर सक्रिय हो जायेगी।

2: हिन्दी समर्थित कीबोर्ड का इंसटालेशन

पीसी में इंसटाल करने के लिये http://www.bhashaindia.com की साइट पर Download पर क्लिक करें Windows xp के लिए Indic input 1 पर क्लिक करें और Windows-7 के लिये Indic input 2 पर क्लिक करें फाइल को पीसी में सेव करें indic imei फाइल पीसी पर सेव हो जायेगी। इस Zip फाइल पर क्लिक करने पर कीबोर्ड को इंसटाल करें।

कीबोर्ड सक्रिय करने के लिये Start बटन पर क्लिक करें Control Panel पर जाएं Regional and Language Options में जाएं Languages tab पर क्लिक करें Details पर क्लिक करें Add क्लिक करें input language में Hindi सलेक्ट करें keyboard layout/imei में Hindi Indic imei सलेक्ट करें OK पर क्लिक करें Apply पर क्लिक करें इसके बाद Restart करने पर हिन्दी समर्थित कीबोर्ड इंसटाल हो जायेगा।

3: प्रोग्राम की यह स्थापना पूरी हो जाए फिर ऑफिस का कोई भी कार्यक्रम शुरू करिए, नोटपैड और वर्डपैड सहित। Windows के दाईं ओर, नीचे की तरफ़ आपको विभिन्न कार्यक्रमों के चिन्ह दिखाई देंगे; उसी में आपको भाषा संकेतक भी दिखाई देगा। इसे क्लिक करिए और फिर जो छोटा मेन्यू नज़र आएगा उसमें हिन्दी को सलेक्ट करिए। अब आपका कम्प्यूटर हिंदी में टाइप करने के लिए तैयार है। Alt+Shift पर क्लिक करके भी हिन्दी या अंग्रेजी को कार्य के अनुसर सलेक्ट किया जा सकता है।

हिन्दी समर्थित 'कीबोर्ड' का प्रयोग:

हिन्दी में टाइप के लिय हिंदी ट्रांसलिटरेशन (हू-ब-हू लेखन) का प्रयोग कर सकते है यह फ़ोनेटिक टाइपिंग पर आधारित होता है। यानी आप मानक अंग्रेजी की-बोर्ड पर रोमन लिपि में शब्द टाइप करेंगे तो वह इस्तेमाल किए गए अक्षरों के मुताबिक हिंदी अक्षर टाइप करेगा। उदाहरण के लिए आपके ''क'' टाइप करना है तो आप अंग्रेजी का ''K'' अक्षर दबाएं और वह हिंदी का ''क'' अक्षर बन कर टाइप होगा। यह फ़ोनेटिक के सिद्वांत पर कार्य करता है और अन्य स्थितियों में सबसे अधिक उपयोगी है जहां आप शब्दों को ठीक उसी प्रकार लिखते हैं जैसा उनका उच्चारण होता है।

यूनिकोड के प्रयोग में याद रखने वाली बाते

- ⊙ यूनिकोड को 'पीसी' में सक्रिय करने के लिये विंडो में फाइल होनी चाहिये। अगर नहीं है तो सम्बन्धित वैंडर से डालने के लिये कहे या कोई भी विंडो की सीडी से डाल ले
- ⊙व हिन्दी कीबोर्ड सक्रिय करने के समय पीसी की डीफोल्ट Language नहीं बदले ।
- ⊙व अगर आप माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल में टाइप कर रहे हैं तो टाइप किए हुए शब्द स्पेस, एंटर या टैब बटन दबाने से पहले नहीं दिखेंगे ।
- ⊙ यदि कोई शब्द/अक्षर टाइप करने के बाद बिना कोई जगह दि हुए (जैसे कि स्पेस, एंटर या टैब दबाए हुए) तीर के निशान वाले बटन दबाए गए तो उसके काम करने के लिए उस बटन को दो बार दबाना होगा। अगर शब्दों के बाद जगह है तो बटन एक बार में काम करेंगे।

पेड़ और नदी की पीड़ा

सुरेन्द्र पाल सिंह
निरीक्षक (हिन्दी अनुवादक)
ग्रुप केन्द्र, के.रि.पु.बल, जम्मू

मैंने देखा एक पेड़, जो खड़ा था सीमा के उस पार,
सीमा है ''टाकी'' बार्डर, बंगाल में हस्नाबाद के पास।
भारत-बंग सीमा के बीच, सुंदर एक नदी भी है,
'इच्छामती'' है नाम उसका, सागर संग जुड़ी है।

एक बार मौका मिला, मुझको उसमें विहार का,
सहसा समझ सका न मैं, भेद नीर के फेर का।
एकाएक उस पार से, दर्द की चीख सुनाई दी,
समझा मैं कोई संतरी होगा, पर यह बूढ़े पेड़ ने दी।

सोचा मैंने क्यों नहीं उसकी, व्यथा को सुन लिया जाए,
पर दोनों के बीच में फिर, नदी-सीमा आड़े आए ।
मैंने पूछा क्या बात है? कहो भाई कुछ जोर से,
वह बोला मुझको भी ले चल, बाँध के अपनी डोर से।

मैंने कहा मै भारतीय हूँ, नहीं आ सकता उस पार,
बोला आह भरे हुए वह, वाह! क्या है यह समय की मार ।
इस पर पेड़ ने अपनी मुझको, पूरी व्यथा सुनाई,
जन्म हुआ भारत में मेरा, वहीं ली मैंने अँगड़ाई ।

खुली फिजां में पला बढ़ा, खुशहाली से सराबोर था मैं,
अल्हड़पन यौवन के नशे में, पूर्णत: विभोर था मैं ।
एक लम्हा वो भी था जब, मैं खेला भारत देश में,
फिर कालचक्र ऐसे घूमा, पहुँचा पाक-विदेश में ।

एकाएक 47 में, एक आँधी ज़ोर की आई,
छुड़ाकर हाथ भारत का, वह मुझे पाक देश ले लाई ।
65 के युद्ध से मैं अभी तक, अचेत मुद्रा में था ही पड़ा,
फिर अचानक 71 में, एक और युद्ध लड़ना पड़ा ।

आर-पार की गोलियों ने, मेरा सीना छलनी कर दिया,
दनदनाती तोपों ने मुझे, असहाय निर्बल बना दिया ।

फिर समय के फेर ने, कुछ इस तरह करवट बदली,
ढेरों लाशों पर फिर सीमा, भारत-बंगला में बदली।

इसी बीच फिर पेड़ ने अपनी, अंतिम अर्ज सुनायी,
एक बार दिखला दे मुझको, भारत मेरे भाई।
मैं जीवन का अंतिम काल, उस ओर बिताना चाहता हूँ,
जन्म हुआ जिस देश में मेरा, उसी में मरना चाहता हूँ।

नदी बोली भाई इन्होंने, मुझको भी नहीं छोड़ा,
लकीर खींच दी बीचां-बीच, कर लिया थोड़ा-थोड़ा ।
कूल वही कगार वही है, हेर-फेर हुआ सीमा में,
कर दिया पानी आधा-आधा, भारत-बंगलादेश में ।

हैरान हुआ मैं यह सुनकर, क्या नदी को भी नहीं बख़्शा,
क्या इतने प्यासे थे वो जिन्होंने, बदल दिया इसका नक्शा।
खैर, जल तो सुविधायुक्त है, नहीं बँधता वह इस सीमा में,
पर पेड़ ठहरा अचल प्राणी, घुटता रहा ही पीड़ा में ।

धन्य यह लकीर है जिसने, पत्थर दिल पर रखकर,
देखा मर्म जुदाई का इसने, जहर का घूँट पीकर ।
मेरा माथा ठनका, क्यों सरहद की लकीरें खींची हैं,
कौन हैं वो लोग जिन्होंने, लहू से मिट्टी सींची है।

क्या मिला उनको जिहोंने, देश को तार-तार किया,
भारत माता को चीरकर, आजीवन भर का दर्द दिया।
बोला उन दोनों से मैं, यह ज़माने का दस्तूर है,
बंटवारे के सितम शायद ही, नियती को मंजूर है ।

अंतिम निवेदन है मेरा, तुम धैर्य से वक़्त को सहना,
यदि भरे दिल पीड़ा से, इस ओर आवाज तुम देना ।।

----O----

यूनीकोड - हिन्दी पत्राचार का आधार

रमेश चन्द्र भट्ट
एस डब्ल्यू ओ-बी पंजाब नेशनल बैंक,
मंडल कार्यालय, जम्मू

सूचना प्रौद्योगिकी के युग में अब जबकि सभी कार्यालय कम्प्यूटरीकृत हो गए हैं तथा प्रशासनिक कार्यालयों में समस्त कम्प्यूटरों पर अनिवार्यत: द्विभाषिक शब्द संसाधक उपलब्ध कराये जाने के आदेश हैं, इसक बावजूद देखने मे आता है कि कार्यालय संबंधी अधिकतम पत्राचार अंग्रेजी में ही किया जाता है तथा ई-मेल तो पूर्णत: अंग्रेजी में ही देखने में आती है। इस समस्या की गहराई में जाएं तो हमें इसके लिये निम्न कारक जिम्मेदार नजर आते हैं:-

1. विभिन्न कार्यालयों में हिन्दी प्रयोग के लिये सॉफ्टवेयर की एकरूपता का अभाव:- किसी कार्यालय में एपीएस में कार्य किया जा रहा है तो किसी अन्य में लीप ऑफिस, बरहा आदि में। इस प्रकार जो अलग- अलग सॉफ्टवेयर ईस्टाल कराये गये हैं उनमें भिन्न-भिन्न फॉन्टस् प्रयुक्त होने के कारण फाइलों के संप्रेषण में अनेक समस्याएं पैदा होती हैं क्योंकि जब तक फाईल प्राप्त करने वाले कम्प्यूटर में वही फॉन्ट ईस्टाल नहीं होगा वह प्राप्त फाईल को पढ़ नहीं पाएगा और यदि उसने प्राप्त फाईल संशोधन भी करना है तो उस संबंधित हिन्दी सॉफ्टवेयर को भी अपने कम्प्यूटर पर ईस्टाल कराना होगा।

2. की-बोर्ड के मानकीकरण का अभाव:- कोई प्रयुक्ता इन्स्क्रिप्ट कुंजी-पटल विन्यास में काम कर रहा है तो दूसरा रेमिग्टन, फोनेटिक आदि में । यहां इन तीनों प्रकार की टाईपिंग विधि का संक्षिप्त परिचय देना भी उपयुक्त रहेगा। टाईपिंग का विकास भारत सरकार के राजभाषा विभाग ने किया था। टच टाईपिंग प्रणाली वाली यह विधि भारतीय भाषाओं में टाईपिंग सर्वाधिक वैज्ञानिक विधि है। रेमिग्टन भी एक टच टाईपिंग विधि है तथा उन्हीं के लिये उपयुक्त है जिन्हें हिन्दी टाईपिंग पहले से आती हो। फोनेटिक टाईपिंग नई पीढ़ी में सर्वाधिक लोकप्रिय टाईपिंग विधि है जो भारतीय भाषाओं के ध्वन्यात्मक गुण पर आधारित है। इसमें अंग्रेजी अक्षर के की-बोर्ड दबाकर सीधे हिन्दी में लिखा जाता है। फॉन्टस् से जुड़ी समस्या के निदान हेतु यूनिकोड नामक एनकोडिंग प्रणाली आई है जिसने हिन्दी के मानकीकरण से जुड़ी हमारी बहुत सी समस्याओं को हल करके हिन्दी को अंग्रेजी के समान ही मज़बूत बना दिया है तथा कम्प्यूटरों में हिन्दी प्रयोग में आशातीत वृद्धि हुई है। यूनीकोड एक तरह की कोडिंग प्रणाली है जिसमें संसार की समस्त लिपियों को कूटबद्ध किया गया है। इस प्रकार इसमें संसार की समस्त लिपियों को व्यक्त किया जा सकता है। यूनिकोड कई संचालन प्रणालियों, सभी आधुनिक ब्राऊज़रों और कई उत्पादों में होता है। चाहे कोई भी कम्प्यूटर प्रोग्राम अथवा भाषा हो, यूनिकोड प्रत्येक अक्षर के लिये विशेष नंबर प्रदान करता है। इससे डाटा को बिना किसी बाधा के विभिन्न प्रणालियों से होकर ले जाया जा सकता है। यूनिकोड स्टॅन्डर्ड को सूचना प्रौद्योगिकी से जुड़ी प्रमुख कंपनियों ने अपनाया है। इसको आवश्यकता आधुनिक मानदंडों जैसे एक्सएमएल, जावा, जावास्क्रिप्ट, एलडीएपी के लिये होता है और यह आईएमओ/आईईसी 10646 को लागू करने का अधिकाधिक तरीका है।

विंडोज़ के नये आपरेटिंग सिस्टमज़ में यूनीकोड के अनुसार एप्लीकेशन, सॉफ्टवेयरों तथा वर्ड, एक्सेल, पॉवर पांर्टट आदि में हिन्दी एवं अन्य भाषाओं में दस्तावेज़ तैयार करने की सुविधा अंतर्निहित होती है। यह सुविधा दो यूनिकोड समर्थित फॉन्टस् मंगल एवं एरियल यूनिकोड एम एस के तहत उपलब्ध है। पुराने आपरेटिंग सिस्टमज़ की दशा में इन फॉन्टस् को विंडोज़ की फॉन्टस् डायरेक्टरी में ईस्टाल करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त यह भी ध्यान रखा जाए कि ब्राऊज़र के व्यू मीनू में कैरेकटर इनकोडिंग को

जीवन में असीमित खुशी

UNLIMITED HAPPINESS IN LIFE

कैलास चद्रं मठपाल
निरीक्षक (अनुवादक)
राजभाषा कक्ष, (बीएसएफ), जम्मू

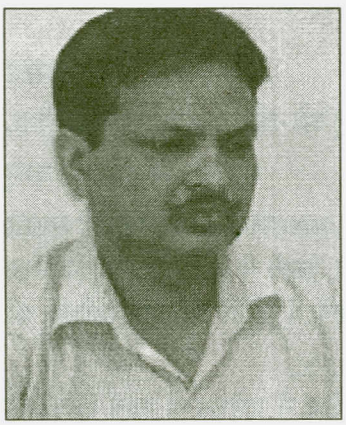

मनुष्य अपने अंतःकरण को निर्मल एंव पवित्र बनाकर जीवन को असीमित खुशी दे सकता है। वास्तव में इस संसार में जीवात्मा अपने भाग्य का फैसला खुद करती है। प्राबध यानी पिछले कर्मों का फल तो उसे भोगना ही होता है लेकिन अज्ञानता अथवा जीवन का वास्तविक उद्देश्य की जानकारी के अभाव में हमेशा दुखी रहता है। जबकि ज्ञान से (awakening) मानव अपने प्रबंध के फलों की भोगना करते हुए जीवन में असीमित खुशी प्राप्त कर सकता है।

सामान्यतः प्रत्येक मनुष्य खुशी के लिए दूसरों पर निर्भर रहता है। जबकि खुशी हमेशा अन्दर से होन वाली ही स्थाई होती है। दुसरों पर निर्भरता ही दुःख का मूल कारण है । इस तथ्य को हम उदाहरण द्वारा इस प्रकार समझ सकते हैं।

जिस प्रकार मशीन बटन दबाते ही चल पड़ती है अथवा मशीन के पास चलने के अलावा और कोई विकल्प नही होता है, क्योंकि मशीन स्वचालित मोड (auto mode) पर होती है। जैसे ही बटन ऑन का दबाया जाता है तो चल पड़ती है और बटन ऑफ कर दबाया जाता है, तो मशीन बन्द हो जाती है उसी प्रकार हम भी स्वचालित मोड (auto mode) पर रहते हैं। जैसे ही हमारी प्रशंसा होती है, हम खुश हो जाते हैं और निदां की जाती है तो दुखी हो जाते हैं या फिर हम ये भी नहीं सोचते कि प्रशंसा एवं निदां हमारे अन्तःकरण को किस प्रकार प्रभावित कर सकती हैं। इस प्रकार आटो मोड पर रहकर हम अपने जीवन में अनायास ही दुख कई रूपों में ले आते हैं। इसका मुख्य कारण हम अपने सुख–दुःख के लिए दुसरे पर निर्भर रहते हैं और अपने विवेक का बिल्कुल भी उपयोग नहीं करते। जबकि हमें अपनी खुशी अथवा सुख के लिए दुसरों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। हम जब तक अन्दर से खुश नहीं रहते या इसकी आदत नहीं डालते, हम बाहर खुश हो ही नहीं सकते।

सबसे पहले हमें यह जानना होगा कि हम कौन हैं। हम शरीर रूपी काया धारण किए हुए शुद्ध, शांत एवं शक्तिशाली आत्मा हैं। हम जब सभी मनुष्यों को शरीर से न देखकर आत्मा के रूप में देखेंगे तो सभी आत्माएं शुद्ध, शांत एवं शक्तिशाली रूप में दिखेंगी। ये बात जरूर है कि आत्मा के द्वारा विभिन्न जन्मों के दौरान जो संस्कार (Personality traits) प्राप्त कर लिए गए हैं वे उसी प्रकार दाग–धब्बे या धूल आदि हैं जिस प्रकार एक सफेद कपड़े पहने हुए व्यक्ति जब यात्रा करता है, और यात्रा के दौरान सफेद कपड़ों पर जो दाग–धब्बे या धूल पड़ जाने के कारण कपड़े गंदे हो जाते हैं लेकिन कपड़े का वास्तविक स्वरूप निर्मल एवं सफेद होता है। यदि दाग, धब्बे और धूल भरे कपड़ो को साफ कर दिया जाए तो कपड़ा पुनः सफेद हो जाता है। उसी प्रकार सभी जीवात्मा जब आधायात्म रूपी ज्ञान के सरोवर में गोता लगाते हैं तो उनके जन्म–जन्मातंर के पाप या गंदगी धुल जाती है।

सबसे पहले असीमित खुशी / सुखी रहने के लिए आप अपने आप को प्यार करें, क्योंकि आपके शरीर में जो आत्मा है वह परमात्मा का अंश है । तत्पश्चात् मनुष्य जैसा है अथवा जैसा उसका स्वभाव है, उसे उस रूप में स्वीकार करें (Accept the way they are)। हर परिस्थिति में अनुकूलता में रहने का (Adoptability) अभ्यास करें ताकि दुख का अंश भी आपको छू न सके । परिस्थितियॉ तो जीवन में हमारे कर्मों के अनुसार आनी तय हैं लेकिन हम अपनी स्थिति में रहकर {यानी इसका बोध होने पर कि हम पवित्र, शंत एवं शक्तिश्वाली आत्मा हैं} किसी भी परिस्थति को छोटा कर सकते हैं। इस प्रकार परिस्थिति सदैव नीचे और हम अपनी स्थिति से उपर यानी अपनी स्थिति से हम परिस्थिति को छोटा कर सकते हैं ।

खुश होने के लिए हमें कभी भी दूसरों पर निर्भर नहीं रहना है। दूसरों से खुशी हमें अस्थाई मिल सकती है यदि जीवन में असीमित स्थाई खुशी चाहिए तो हमें अपने आप से अन्दर से खोजनी होगी। वास्तव में दुख का कारण जब मनुष्य

स्मृति यानी भूतकाल में अथवा कल्पना यानी भविश्य में जीता है और अपने वर्तमान को यों ही गवा देता है तो दुखी रहता है।

मनुष्य को क्रोध तब आता है जब वह दूसरो पर आश्रित (Attach) अथवा निर्भर (dependent) रहता है। यदि दूसरों को बिना शर्त स्वीकार कर लिया जाए तो क्रोध होगा ही नहीं, क्योंकि दूसरों के संस्कारों को हम कदापि बदल नहीं सकते। क्रोध करने पर मनुश्य अपने अन्तःकरण की उर्जा को नष्ट यानी खाली (Deplete) करता है और नकारात्मक उर्जा उसमें पैदा हो जाती है। उस क्रोधी व्यक्ति को कई तरह के नुकसान होते हैं।

आज के युग में प्रत्येक व्यक्ति अपने अस्तित्व को भूलकर दूसरों की रचना (script) के बारे में अपने मस्तिष्क में लिखता है और अपने स्वयं को भूल जाता है जबकि यह सत्य है कि दूसरा व्यक्ति आपके नियत्रंण में नहीं है अर्थात उसके मन में अथवा मस्तिष्क में जो विचार उत्पन्न होते हैं उस पर किसी दूसरे का नियंत्रण कभी हो ही नहीं सकता।

यदि हमें दूसरे व्यक्ति को उत्साहित अथवा अभिप्रेरित (Motivate) करना है तो हमें उसे अपनी आत्मीयता से प्रभावित करके जो कार्य वह कर सकता है और जो हम उससे करवाना चाहते हैं, हम अभिप्रेरणा से ही अथवा भावात्मक बौद्धिकता (Emotional intelligences) से ही करवा सकते हैं। जिससे इच्छित फल (Desired result) प्राप्त किया जा सकता है।

अह्म अर्थात (Ego) व्यक्ति के दिमाग (mind) की गलत उपज अथवा धारणा है (A false imagination of oneself which he really not) जो कि वास्तव में वह नहीं होता है। अह्म व्यक्ति तब करता है जब वह कृत्य को या अपने पद को अपना अस्तित्व समझ लेता है (Role conscious)। जबकि वह हमेशा एक ही रोल या कृत्य में नहीं होता। जैसे घर पर उसका रोल, मित्रों के साथ उसका रोल एवं कार्यालय या कार्य क्षेत्र में उसका रोल आदि आदि। वास्तविक स्वरूप प्रत्येक मनुष्य का एक पवित्र, शक्तिशाली, आत्मा का है जो कि अपने आप में स्वतंत्र है।

हम अपने व्यक्तित्व का विकास केवल अन्दर से स्वच्छ एवं सकारात्मक विचारों से ही कर सकते हैं क्योंकि (Thought creates destiny) विचार ही भाग्य बनाता है। यदि हमारे विचार सकारात्मक होते हैं तो हमारी आभामंडल (aura) भी प्रफुल्लित, धैर्यशाली, गंभीर एवं दृढ़ होती है अन्यथा मानव दुखी होकर रूदन करता है। विचार मनुष्य के सैंट (perfume) की तरह है अर्थात् मनुष्य का व्यक्तित्व दुसरों को सैंट की तरह सहज ही आभास हो जाता हैं। यदि विचार नकारात्मक होते हैं तो उसे नकारात्मक उर्जा ही (echo) प्रतिध्वनि के रूप में मिलती है।

अंत में यही कहना चाहूगां कि असीमित सुख जीवन में मनुष्य केवल जाग्रत अथवा ज्ञान में रहकर (Awaken) ही प्राप्त कर सकता है। यही जीवन में असीमित खुशी (unlimited happiness in life) प्राप्त करने की कुंजी है।

----O----

आपके पत्र

मान्यवर विश्वकर्मा जी,

सादर अभिवादन !

आज दिनांक 30 अप्रैल, 2012 का दिन है और आपकी स्मरणीय अध्यक्षता में दिनांक 30 अप्रैल, 2012 को अखिल भारतीय भव्य ''कवि सम्मेलन'' सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम को हुए आज पूरा मास होने जा रहा है पर ऐसा लगता है कि यह बात कल की है। उसकी सुमधुर स्मृतियाँ मन:पटल पर आज भी यथावत् छायी हुई है। वह रात एक ''ऐतिहासिक रात'' सिद्ध हुई। रात रसों में रसरंजित रचनाओं से स्वयं धन्य हो गयी। कवियों व श्रोताओं के बीच की दूरी कस्तूरी में बदल गयी। कवि सम्मेलन के सारांशत: आनंद में आपके संक्षिप्त अभिभाषण ने एक अमूल्य मणि इन शब्दों से जोड़ दी, ''हम ध्यानमग्न होकर कवियों की रचनाओं को सुनते हैं, मनन करते हैं तथा विचाते हैं कि हमारे लिए करने योग्य उपदेशात्मक सन्देश क्या है?क्योंकि हम वैज्ञानिक हैं।'' आपके इस प्रकार के सात्विक व यथार्थ चिन्तन के लिए राशि-राशि शुभकामनाएँ ।

यह अत्यन्त सौभाग्य की बात है कि आप जैसे श्री राम (डॉ. राम विश्वकर्मा) को डॉ. अमर सिंह जी वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी के रूप में साक्षात् हनुमान जी ही मिले हुए हैं। इनके समान अथक परिश्रम करने वाले उदाहरण बहुत ही अल्पमात्रा में मिलते हैं। उस दिन कार्य की व्यस्थता के कारण डॉ. सिंह शायद ही भोजन कर पाये हों। मैं दिनांक 30.03. 2012 को दिन में ही पहुँच गया था। डॉ. सिंह के साथ हमने शिक्षकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम भी देखा जो कि बहुत ही सराहनीय था। आपके द्वारा आयोजित प्रतिभागियों के लिए पुरस्कार-वितरण योजना के शुभारम्भ में हमने ही सरस्वती बन्दना का पाठ किया था। प्रशिक्षण के अन्तिम सत्र में डॉ. अमर सिंह जी के कुशल निर्देशन में हिन्दी के सन्दर्भ में हमारा अभिभाषण हुआ जिससे उपस्थित श्रोता समुदाय विशेष लाभान्वित हुआ।

मान्यवर, आपके सौहार्द से हमारा मन आज भी पुलकित है। ठीक उसी प्रकार जैसे चन्द्रमा आकाश में होता है और कुमोदिनी सरोवर में। चन्द्रमा की किरणों को देखते ही कुमोदिनी खिल जाती है। प्रात: की बेला में सूर्य आकाश में होता है तथा कमल सरोवर में, पर सूर्य को देखते ही कमल मुस्काराने लगते है। बस! सहज मुस्कान ही सच्चिदानन्द स्वरूप है, जो सार्वकालिक, कमनीय, पूजनीय व वन्दनीय है ।

आपके कुशल निर्देशन तथा डॉ. अमर सिंह जी के एकांकी अथक परिश्रम से कार्यक्रम अत्यन्त गौरवशाली रहा। आपका भविष्य सुखमय, समृद्धिकारी एवं मंगलमय हो; ऐसी मेरी परमेश से कामना है।

भवनिष्ठ
श्री कृष्ण निर्मल
उप-शिक्षा अधिकारी, नई दिल्ली

प्रतिष्ठा में,
डॉ. राम विश्वकर्मा जी
निदेशक, आई.आई.आई.एम., जम्मू एवं
अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू

बहादुर सिंह निर्दोषी
राष्ट्रीय संत कवि

सं. 121/2012 दिनांक 17 अप्रैल, 2012

परम श्रद्धास्पद डॉ. राम विश्वकर्मा जी
निदेशक, आई.आई.आई.एम., जम्मू
एवम् अध्यक्ष-नराकास, जम्मू

मान्यवर,

30 मार्च, 2012 को नराकास के तत्वावधान एवम् आपके संरक्षण में आयोजित अखिल भारतीय कवि सम्मेलन में आपके स्वस्थ मंच से काव्य पाठ करने का सुयोग मिला, एतद्र्थ आपके औदार्य के प्रति एवम् कवि सम्मेलन के संयोजक डॉ. अमर सिंह जी के प्रति मैं हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। नि:संदेह हिन्दी के उन्नयन में यह आपका एक महत्वपूर्ण प्रयास है साथ ही इस राष्ट्रीय यज्ञ में सहयोग देना हम सबका राष्ट्रीय धर्म है।

मेरे सभी साहित्य धर्मी आपकी मनोनुकूल व्यवस्था, सेवा और प्रदत्त सम्मान के प्रति आज भी अन्तर्मन से पुलकित हैं। वैयक्तिक रूप से जो आपने अपने श्री करों से मुझे सम्मानित किया, उसका सारा श्रेय आपकी आन्तरिक महानता को जाता है।

आपके अधीनस्थ सभी सहयोगियों के विम्ब-बतार्षों का मिठास आज भी मेरे हृदय को सरस बना रहा है- श्रीमान् मैं धन्य हूँ।

आपके आयोजन के पश्चात् मुझे पूर्वांचल के कुछ आयोजनों में जाना पड़ा। अत: बिलम्ब से मेरी भावुकता आपकी स्मृति में समर्पित हो रही है। इसके लिए कृपया मुझे क्षमाकर अपने अधिकार का सदुपयोग करे।

आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति यह प्रयास उत्तरोंत्तर भविष्य के पटल को इसी भाँति पल्लवित एवम् पुष्पित करता रहेगा - यही हम सबका सम्यक् धर्म है।

राशि-राशि शुभताओं के साथ
आपका अपना ही अपृथक हाथ

डॉ. बहादुर सिंह निर्दोषी
फिरोजाबाद (उ.प्र.)

अजन्मी बेटी

डॉ. मधु चतुर्वेदी
चौपला, गजरौला (उ.प्र.)

अजन्मी बेटी की करूण पुकार,
मां मुझे रख ले तेरी संतान हूं मैं!

कोख में मां मैं तो अमृत सी ढ़ली,
तूने क्यों समझा मुझे विष की डली;
क्यों बहाए रक्त तेरा प्राण हूँ मैं!

पूर्व इसके स्वर मेरा गुंजन बने,
तूने मेरी स्वांस हित फंदे बुने;
गुनगुना के देख सुंदर गान हूँ मैं!

मैं तेरी क्यारी का सुन्दर फूल हूँ ,
मत समझ विधना की कोई भूल हूँ ;
सृष्टि का सबसे सुगढ़ सुविधान हूँ मैं!

मां तेरी ममता के मैं पद चिन्ह हूँ ,
अक्स तेरा हूँ न किंचित भिन्न हूँ ;
मत मिटा मुझको तेरी पहचान हूँ मैं!

मां तेरी पीड़ा की मैं सहभागिनी,
क्यों मेरे अस्तित्व से तू अनमनी ?
सृष्टि को मातृत्व का वरदान हूँ मैं!

क्यों अनादृत है तू मुझको जन्म दे?
संकुचित क्यों है तू इसका मर्म दे??
गर्व से रख ले, तेरा सम्मान हूँ मैं!

क्यों बहाए अश्रु मेरे जन्म पर?
मां, हुलस उत्सव मना इस पर्व पर;
तेरे अधरों की सहज मुस्कान हूँ मैं!

दो कुलो का मैं ही तो अनुबंध हूँ ,
भ्रात हित मैं स्निग्ध सा सम्बंध हूँ ;
मैं प्रकृति, पुरूषत्व का आधान हूँ मैं!

पुत्र तुझको स्वर्ग में पहुँचायेगा?
मैं नहीं तो पुत्र कैसे आयेगा??
यूं न ठुकरा, स्वर्ग का सोपान हूँ मैं!

क्या है वो, जो पुत्र ही कर पाएगा?
क्या नहीं, जो मेरे वश में आएगा?

मान ले मां, शक्ति हूँ, कल्याण हूँ मैं!
मैं तेरी श्रद्धा, तेरा संस्कार हूँ ,
शील, करूणा, लाज का आधार हूँ ;
तेरे अंशों का नया परिधान हूँ मैं!

मैं मिटी तो पीढ़ियां मिट जाएंगी,
ये व्यथा सदियां नहीं सह पाएंगी;
आदि युग से वंश का संधान हूँ मैं!

----O----

सच के साँचे

चिराग जैन
कवि, श्रृंगार रस
दिल्ली

सच के साँचे हमें क्यों जटिल से लगे
उम्र को झूठ में ढाल कर चल दिये
सादगी की सुहानी डगर छोड़कर
ज़िंदगानी फटेहाल कर चल दिये ।

जिस रवैये से हम ख़ौफ़ खाते रहे
क्यों उसी के लिये हम पुरस्कृत हुए
ज़िंदगी पर चढ़े पाप के आवरण
पाठ बचपन के सारे तिरस्कृत हुए
प्रश्न तो आत्मा ने उठाए मगर
हम उन्हें बिन सुने टाल कर चल दिये।

हर घड़ी भावनाएँ खरोंची गईं
हर क़दम दंभ की जीत होती रही
राजसी स्वप्न नयनों पे छाए रहे
सत्व की रौशनी मौन सोती रही
लोभ की राह पर कोई रोता मिला
हम उसे और बदहाल कर चल दिये।

घर से खुशियाँ कमाने चले थे मगर
घर की खुशियाँ लुटाते रहे उम्र भर
कौन जाने कि किस चैन के वास्ते
चैन अपना गँवाते रहे उम्र भर
उम्र भर आँकड़े ही जुटाते रहे
और हम खुद को कंगाल कर चल दिये।

भागते-दौड़ते रास्तों पर अगर
कोई लाचार तनहा तड़पता मिला
पूस की रात में कोई बेघर दिखा
जेठ की प्यास में कोई मरता मिला
एक पल के लिये मन द्रवित तो हुआ
भावना पर कफ़न डाल कर चल दिये ।

----O----

कार्यान्वयन समिति, जम्मू
गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग
संस्थान (सी. एस. आइ. आर.) जम्मू
रतीय कवि सम्मेलन
मार्च, 2012
द्वारा प्रायोजित
क्षेत्रीय कार्यालय, जम्मू
रपोरेशन, क्षेत्र– II , जम्मू
आइ.आइ.एम. (आर.आर.एल.),
2012 3 30

मिति, जम्मू
विभाग
आइ. आर.) जम्मू
म्मेलन
जम्मू
II , जम्मू
ार.आर.एल.)

ति, जम्मू
आर.) जम्मू
लन
र.एल.),

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू
भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग
भारतीय समवेत औषध संस्थान (सी. एस. आइ. आर.) जम्मू
के तत्त्वावधान में
राजभाषा सम्मेलन
यूनिकोड प्रशिक्षण कार्यक्रम
29–30 मार्च, 2012
द्वारा प्रायोजित
आयकर कार्यालय, जम्मू

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू
भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग
भारतीय समवेत औषध संस्थान (सी. एस. आइ. आर.) जम्मू
के तत्त्वावधान में
राजभाषा सम्मेलन
यूनिकोड प्रशिक्षण कार्यक्रम
29–30 मार्च, 2012
द्वारा प्रायोजित
आयकर कार्यालय, जम्मू

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू
भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू
भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग
के तत्त्वावधान में
राजभाषा सम्मेलन
यूनिकोड प्रशिक्षण कार्यक्रम
29–30 मार्च, 2012
द्वारा प्रायोजित
आयकर कार्यालय, जम्मू

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू
भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग
भारतीय समवेत औषध संस्थान (सी. एस. आइ. आर.) जम्मू
के तत्वावधान में
राजभाषा सम्मेलन
यूनिकोड प्रशिक्षण कार्यक्रम
29—30 मार्च, 2012
द्वारा प्रायोजित
परमिन्दर सिंह
आर.के. रैणा

परमिन्दर सिंह
आर.के. रैणा